सचित्र कृष्णकथा पाण्डुलिपियों का कलात्मक अध्ययन

(सन्दर्भ–वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में

पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

शोध निर्देशिका | **शोध छात्रा**

डॉ0 सोनिका
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय

सपना शर्मा

चित्रकला विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा–282005
2020

शोध संकल्पना

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ की बहुरंगी संस्कृति में आध्यात्मिक जीवन दर्शन का जितना महत्व है, उतना ही महत्व पर्वों, त्यौहारों, व्रतों और उनसे जुड़ी पौराणिक कथाओं और लोककथाओं का है। इन्हीं पर्वों आदि में भारतीय विश्वास के वे गहरे बीज मन्त्र छिपे हैं। भारत प्राचीन काल से ही अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिये जाना जाता है। यहाँ कला और संस्कृति का इतना सुन्दर समन्वय हुआ है, कि वो हमें अन्यत्र कम ही देखने को मिलता है। यहाँ की कला में युग–युग की आध्यात्मिकता निहित रही है। जिस प्रकार किसी देश की कृतियाँ उसकी गौरवमयी परम्परा की प्रतिविम्ब होती हैं। उसी प्रकार वहाँ की चित्रकला, लोककला, स्थापत्यकला वैभव के जीते जागते उदाहरण हैं। कला हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हमारे हर क्षण और दैनिक जीवन के सभी क्रियाकलापों में भी सदैव कला निहित रहती है। सम्पूर्ण भारत में अलग–अलग क्षेत्रों में कला अनेक रुपों में सामने आयी और कई शैलियों में अलग–अलग रुपों में विकिसित हुई, जिनमें प्रागैतिहासिक कला, राजस्थानी कला, मुगल कला, पहाड़ी कला आदि भारतीय कला शैलियाँ प्रमुख हैं। इन सभी कला शैलियों में भारतीय धर्म, संस्कृति, रीति–रिवाज, दैनिक कार्य–कलापों को चित्रकारों ने सर्वोपरि माना और इन्हें लोकचित्रों, भित्तिचित्रों, ताड़पत्रों, सचित्र पाण्डुलिपियों, लघुचित्रों आदि के रुप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया।

दसवीं शताब्दी ईसवी से पहले भारतीय चित्रकला की प्राचीन परम्परा का प्रतिनिधित्व भित्तिचित्रों में मिलता है। ये भित्तिचित्र अधिकांशतः बौद्ध और जैन धर्म से सम्बन्धित हैं। प्राचीनकाल में नाट्यशालाओं, देव मन्दिर एवं राजभवनों के बाहरी व भीतरी प्रकोष्ठों की दीवारों पर चित्रांकन किया जाता था।

दशवीं शताब्दी ईसवीं से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी ईसवी तक के पाँच सौ वर्षो में चित्रकला की परम्परा को जीवित बनाये रखने का श्रेय जैन, गुजरात एवं अपभ्रंश शैलियों को है। मध्यकाल में मुस्लिम शासकों के साथ मन्दिरों तथा कलात्मक स्थलों के विनाश की प्रवृत्ति के कारण धर्म प्रचार हेतु पाण्डुलिपियों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। लिपि से चित्र की भाषा सरल व स्पष्ट होने के कारण पाण्डुलिपियों में चित्रों को भी समाहित किया गया। उत्तर मध्यकाल में राजनीतिक अशान्ति के कारण धर्म का प्रचार–प्रसार बढ़ा। धर्म प्रचार का सरल माध्यम चित्रित ग्रन्थ थे।

14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक हिन्दू राजाओं और व्यापारियों ने भी हिन्दू धार्मिक पुस्तकों तथा गाथाओं को चित्रित करने के लिये कलाकारों को आश्रय दिया। परिणाम–स्वरुप बौद्ध और जैन से अलग वैष्णव धर्म सम्बन्धी सचित्र ग्रन्थों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। इन सचित्र ग्रन्थों का प्रमुख केन्द्र बिहार, बंगााल, नेपाल, गुजरात, मालवा, अवध, पंजाब, उड़ीसा, उत्तरी हिमालय क्षेत्र, राजस्थान के अनेक केन्द्र तथा पूर्व भारत में जौनपुर से लेकर दिल्ली तक अनेक स्थान थे। अब तक प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर भारत में सन् 992 ईसवी की बौद्ध **'सहास्रिकाप्रज्ञापारिमिता'** प्राचीनतम् ताड़पत्रीय चित्रित पाण्डुलिपि है। पाण्डुलिपि को हस्तप्रति, लिपिग्रन्थ इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। यह एक हस्तलिखित ग्रन्थविशेष होता है, जो एक या अनेक व्यक्तियों द्वारा हाथ से लिखा गया हो। भारत में पाण्डुलिपियों के निर्माण का मुख्य उद्देश्य धर्म के प्रचार व ज्ञान की अतिप्राचीन सभ्यता का संरक्षण है। प्राचीन ग्रन्थों में चित्रण के लिये जो आधार प्रयुक्त हुये हैं, उनमें ताड़पत्र, भोजपत्र, कागज, लकडी के पट और कपड़ा प्रमुख थे। ग्रन्थ के लिये सम्पूर्ण भारत में ताड़पत्र का व्यापक प्रयोग हुआ तथा धार्मिक ग्रन्थ लेखन में इसे अधिक महत्व दिया गया। 14वीं शताब्दी के पश्चात भारत में ग्रन्थों का निर्माण कागज पर होने लगा था। इन सचित्र ग्रन्थों में कृष्णकथा विषयक चित्रों की विशेष चर्चा रही, जिनमें श्रीमद्भागवत पुराण, गीतगोविन्द, कृष्णलीला आदि प्रमुख हैं। 'भागवतपुराण' हिन्दू धर्म के अठ्ठारह पुराणों में प्रमुख है व 'गीतगोविन्द' संस्कृत साहित्य का कृष्णकाव्य विषयक गीतकाव्य का उत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है, जिसकी रचना जयदेव ने की थी। वैष्णव धर्म के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इस ग्रन्थ का भी भारत भर में प्रचार हुआ। दृष्टान्त चित्र लगभग 19वीं शताब्दी तक भारतीय चित्रकला की अनेक शैलियों में निर्मित होते रहे। इस प्रकार ये चित्र भारत के विभिन्न प्रदेशों में पाये जाते हैं। अतः इन स्थानों में से 'कृष्णकथा' सम्बन्धित पोथी का ऐसा ही उत्कृष्ट उदाहरण उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद में स्थित 'वृन्दावन शोध संस्थान' व 'ब्रज संस्कृति शोध संस्थान' में कागज पर अंकित देखने को मिलता है। मथुरा भगवान कृष्ण की जन्मस्थली और भारत की अतिप्राचीन तथा जगद्–विख्यात नगरी है।

मेरे शोध का विषय ''सचित्र कृष्णकथा पाण्डुलिपियों का कलात्मक अध्ययन'' है। कालान्तर में वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान में सांस्कृतिक मूल की विपुल सम्पदा, यथा–प्रस्थर

शिल्प, सिक्के, ताम्रपत्र, प्रस्तर में खुदाई किये गये अवशेष, ताड़पत्र लिखित ग्रन्थ, भारत की विभिन्न शैलियों के लघुचित्र, विभिन्न विषयों की पुस्तकें व अति बहुमूल्य वस्तुएं संग्रहीत हैं। विशेषकर इन शोध संस्थानों का सवसे बहुमूल्य भण्ड़ार विभिन्न विषयों पर आधारित पाण्डुलिपियाँ है जो लगभग 60,000 की संख्या में हैं।

'कृष्णकथा' पोथी लघुचित्रों की रचनात्मकता सृजनशीलता उच्च कोटि की है। इसकी कल्पनागत रचनाशीलता एवं सौन्दर्य तत्वों के विवेचन हेतु मैंने इन पाण्डुलिपि लघुचित्रों को अपने शोध हेतु चयनित किया है, जो वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान में संग्रहीत 'कृष्णकथा' की विषय–वस्तु पर आधारित हैं। चौरासी कोस में फैले ब्रज क्षेत्र में वर्ष भर विभिन्न प्रकार के पर्व, उत्सव आदि मनाये जाते हैं। इन रीति–रिवाजों, परम्पराओं व ब्रज के इतिहास को विदेशी आन्क्रान्ताओं से सुरक्षित रखने के लिये राजा, महाराजाओं, व्यापारियों व सन्तों ने इसे लिपिबद्ध किया व करवाया। चित्र से लिपि की भाषा सरल व स्पष्ट होने के कारण इनमें चित्रों को भी समाहित किया जाने लगा। इनमें से वृन्दावन शोध संस्थान में संग्रहीत एक सचित्र ग्रन्थ 'वर्षोत्सवपद' है, जिसमें ब्रज के सभी उत्सवों का सचित्र वर्णन है। जिसके ग्रन्थकार 'पुष्टिमार्गीय अष्टम् पीठाधीश्वर श्री लाल जी महाराज' हैं। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त श्रीमद्भागवत पुराण पर आधारित चित्र व अन्य कृष्णकथा सम्बन्धी चित्र संग्रहीत हैं। मेरे द्वारा इस विषय के चयन का कारण इन छुपे हुये सचित्र ग्रन्थों को प्रकाश में लाना व ब्रज के पर्व, त्यौहारों, संस्कृति, पौराणिक कथाओं व लोककथाओं के सचित्र पाण्डुलिपियों के रुप में सहेजे गये कलात्मक सौन्दर्य को सबके समक्ष उद्घाटित करना है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

पोथी चित्र आज जिस स्वरुप में है उनका निर्माण व विकास कई युगों की देन है। जैसा कि कहा गया है कि पाण्डुलिपि में ताड़पत्र, कागज, कपड़े पर किसी एक प्रसंग को कलात्मक रुप से अभिव्यक्त किया जाता था। अपनी कलात्मक उत्कृष्टता से परिपूर्ण मथुरा का प्राचीन नाम सूरसेन था। यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही अपनी चित्रकला परम्परा के लिये जीवन्त माना जाता है।

मेरे शोध के विषय से सम्बन्धित साहित्य की बारीकियों को समझने के लिये मैने ''प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, भरतपुर'' व ''अलवर राजकीय संगहालय'' का भ्रमण किया, जिससे मुझे अपने विषय से सम्बन्धित

पाण्डुलिपियों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। Jamil Bhrijbhushan द्वारा लिखित The world of Indian Miniatures, व Shantilal Nagar द्वारा रचित Miniature painting and Sculptures, और डॉ0 शैलेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'उत्तर भारतीय पोथी चित्रकला' आदि पुस्तकों से भारत की पारम्परिक पाण्डुलिपियों के विषय के बारे में ज्ञात हुआ। इसके अतिरिक्त ''वृन्दावन शोध संस्थान'' वृन्दावन से, डॉ0 प्रेम कुमारी श्रीवास्तव, द्वारा लिखित 'काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ (रामचरितमानस)' व प्रेमशंकर द्विवेदी द्वारा लिखित 'गीतगोविन्द साहित्यिक एवं कलागत अनुशीलन', आदि पुस्तकों का अध्ययन किया, जिससे मुझे अपने विषय से सम्बन्धित छायाचित्र देखने को मिले तथा शैलीगत विशेषताओं से भी परिचित हुई।

मैं अपने शोध के माध्यम से श्री लालजी महाराज कृत 'वर्षोत्सवपद' की प्राप्त चित्रित पोथी, भागवतपुराण व अन्य कृष्णकथा सम्बन्धी पोथियों का कलात्मक अध्ययन व इन चित्रों में निहित प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों और कर्म–काण्डों के महत्व को प्रस्तुत करने का प्रयास करुँगी। साथ ही इन पोथियों को बनाने के पीछे कलाकारों की आत्मिक अवधारणा, चित्रों की कलात्मकता व शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन भी प्रस्तुत करुँगी।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की सफलता व उसकी वस्तुनिष्ठा हेतु परिकल्पना की अत्यन्त आवश्यकता होती है, जिससे हम अपने शोध के उद्‌देश्य को स्पष्ट रुप से प्राप्त कर सकें व शोध विषय पर केन्द्रित रह सकें। कला के अनेक विषयों में से भारतीय साहित्य में ब्रज के वर्षोत्सवपद की कथा व भागवतपुराण पढ़ने पर, इस पर बनी चित्रित पोथी ने मेरी जिज्ञासा को और बढ़ाया। कागज पर निर्मित कृष्णकथा पोथी लिखित साहित्य पर आधारित लघुचित्रों का कलात्मक अध्ययन करुँगी जो वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान में संग्रहीत हैं।

उद्‌देश्य

1- मध्यकालीन उत्तर भारत में पोथी चित्रण परम्परा की पृष्ठभूमि का परिचय देना।

2- वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के ब्रज संस्कृति के संरक्षण में योगदान की विवेचना करना।

3- ब्रज क्षेत्र (चौरासी कोस) में पोथी चित्रण परम्परा का परिचय प्रस्तुत करना।

4- सचित्र कृष्णकथा पाण्डुलिपियों की विषय–वस्तु को अध्ययन करना।

5- सचित्र पाण्डुलिपियों के तकनीकी पक्ष को उद्घाटित करना।

6- कलातत्वों के आधार पर पाण्डुलिपियों का कलात्मक अध्ययन करना।

चर

- कृष्णकथा चित्रों की विषय–सामग्री
- कला के तत्व
- संयोजन के सिन्द्धान्त

कार्य प्रणाली

- **अनुसंन्धान अभिकल्प**

– यह शोध वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन में संग्रहीत कृष्णकथा सम्बन्धी सचित्र पोथियों के कलात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

- ***प्रदत्त संकलन***

1. प्राथमिक स्त्रोत– कृष्णकथा पाण्डुलिपियाँ व उनके छायाचित्र

2. द्वितीयक स्त्रोत– पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकायें, समाचार पत्र, कैटलॉग, इन्टरनेट वेबसाइट्स, साक्षात्कार, संग्रहालय में भ्रमण आदि।

- **प्रतिदर्श आकार**

मेरे द्वारा शोध संस्थानों में संगहीत चित्रित कृष्णकथा सम्बन्धी पोथियों के लगभग 150–180 चित्रों का अध्ययन किया जायेगा।

- **साक्षात्कार**

शोध संस्थानों के संग्रह संरक्षक से साक्षात्कार

सीमायें

प्रत्येक शोध कार्य की एक सीमा होती है व किसी भी शोध कार्य की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए पूर्ण करना होता है। इस शोध कार्य हेतु भी अनेकों पाण्डुलिपियों में से केवल सचित्र कृष्णकथा पाण्डुलिपियों का चयन किया जायेगा, जिससे शोधकार्य समय सीमा के अन्दर पूर्ण किया जा सके।

- **आधुनिक युग में प्रासंगिकता**

भारत के प्रादृश्य में मथुरा भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व ऐतिहासिक दृष्टि से बेजोड़ है। ये नगरी निःसन्देह धर्म व कला की नगरी रही है। यहाँ के जन–जन के मन मे कला व धर्म बसा है, क्योंकि कलाधार, कलावतार भगवान कृष्ण ने यहाँ जन्म लिया। ब्रज क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक परम्परा को मन्दिरों, ऐतिहासिक ग्रन्थों, कलाओं, हस्तकलाओं, लोकनृत्यों के रुप में संजोये हुये है। ऐतिहासिक ग्रन्थों के द्वारा हम किसी क्षेत्र के इतिहास, परम्परा, धर्म, कला, सांस्कृतिक विरासत के बारे में ज्ञात करते हैं। वृन्दावन में स्थित इन संस्थानों का उद्देश्य ब्रज क्षेत्र में पाण्डुलिपियों एवं अन्य सामग्री का संग्रह एवं संरक्षण तथा उसे देश के विभिन्न भागों व विदेशी विद्वानों को उपलब्ध कराना है। इस रूप में ये हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को संजोये हुए हमारी गौरवपूर्ण परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विषय–अनुक्रमणिका

भूमिका–

प्रथम अध्याय– वृन्दावन शोध संस्थान व ब्रज संस्कृति शोध संस्थान का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व

द्वितीय अध्याय– ब्रज क्षेत्र (चौरासी कोस) मे ंसचित्र पाण्डुलिपि चित्रण परम्परा–एक परिचय

तृतीय अध्याय– ब्रज की कृष्णकथा पाण्डुलिपियों की विषय–वस्तु

3-1– वर्षोत्सव–पद

3-2– श्रीमद्भागवत

3-3– अन्य कथाओं पर आधारित चित्र

चतुर्थ अध्याय– कृष्णकथा पाण्डुलिपियों का तकनीकी पक्ष

4-1– पाण्डुलिपयों की निर्माण प्रविधि

4-2– शैलीगत विशेषतायें

पंचम अध्याय– सचित्र कृष्णकथा पाण्डुलिपियों का कलात्मक अध्ययन

5-1– रेखा सौन्दर्य

5-2– रंग योजना

5-3– आकृति निरुपण

5-4– चित्र संयोजन

उपसंहार–

परिशिष्ट– सन्दर्भ सूची

Bibliography

Internet website

चित्र–सूची

<u>अनुसंधान अभिकल्प</u>

भूमिका के अन्तर्गत मध्ययुगीन उत्तर भारत में पोथी चित्रण परम्परा की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालूँगी।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत शोध संस्थानों की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करुँगी, साथ ही इन संस्थानों में संग्रहीत विभिन्न विषयों की पोथियों पर चर्चा समाहीत है। यह प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षक के रुप में भारत में मुख्यरुप से क्रियान्वित है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत ब्रजक्षेत्र (चौरासी कोस) में सचित्र पाण्डुलिपि चित्रण की परम्परा के परिचय प्रस्तुत करुँगी।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत कृष्णकथा पाण्डुलिपियों की विषय–वस्तु की चर्चा की जायेगी। भाव और काव्य का उत्कृष्ट समन्वय वर्षोत्सवपद एवं भागवत कथानक को विभिन्न रुपों में चित्रित किया गया है, जिनका परिचय भी इसी अध्याय में दिया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत पाण्डुलिपियों की तकनीकी पक्ष पर प्रकाश डालते हुये उनकी निर्माण प्रविधि की विस्तारपूर्वक चर्चा करुँगी।

पंचम अध्याय में चित्रित पोथियों का कला तत्वों (रेखा सौन्दर्य, रंग संयोजन, आकृति निरुपण, चित्र संयोजन) के आधार पर कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, शैलेन्द्र 2009, उत्तर भारतीय पोथी चित्रकला, कला प्रकाशान, वी.एच.यू., वाराणसी।
2. दुबे, उदय शंकर, 2009, हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की खोज का इतिहास, हिन्दुस्तान अकादमी, इलाहाबाद।
3. द्विवेदी, प्रेम शंकर, 1998, गीतगोविन्द साहित्यिक एवं कलागत अनुशीलन कला प्रकाशन, वी.एच.यू., वाराणसी।
4. द्ववेदी, प्रेम शंकर,1988, गीतगोविन्द (पूर्वीय भारतीय चित्रकला कला प्रकाशन, वी.एच.यू., वाराणसी।
5. द्विवेदी, मीरा, 2009, भारतीय साहित्य एवं कला में श्रीराधा, कला *प्रकाशन, वी.एच.यू., वाराणसी।*
6. प्रताप, रीता, 2010, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,*अतिशय कलित, मालवीयनगर, जयपुर।*
7. वर्मा, महेन्द्र, 2006, भारतीय कला की परम्परा, कला प्रकाशन,*दिल्ली।*
8. श्रीवास्तव, प्रेम कुमारी, काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ (रामचरितमानस)*कला प्रकाशक, वी.एच.यू., वाराणसी।*

Website

1. https://www.namami.gov.in/what-is-menuscript
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Manuscript
3. https://www.vocabulary.com/dictionary/manuscript
4. https://www.dictionary.com/browse/manuscript
5. https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/manuscript
6. https://www.thehindu.com/books/heritage-of-indian-manuscript-tradition/article27013161.ece
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Palm-leaf_manuscript
8. https://www.himalayanart.org/search/set.cfm?setID=1252
9. https://www.himalayanart.org/search/set.cfm?setID=1802
10. http://www.husainiarts.com/hindu--buddhist-devotional-manuscripts.html
11. https://phys.org/news/2006-09-imaging-technology-year-old-sacred-hindu.html
12. http://en.vribharat.org/india/Main_Page
13. https://www.youtube.com/watch?v=zOr3tpTtp1o
14. https://hi-in.facebook.com/laxminarayan.tiwari.50/

चित्र संख्या–1 वर्षोत्सवपद,(ब्रजभाषा),, आकार– 19.5X15 से.मी., संग्रहीत– वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

चित्र संख्या–2 वर्षोत्सवपद,(ब्रजभाषा), आकार– 19.5X15 से.मी., संग्रहीत– वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

चित्र संख्या–3 वर्षोत्सवपद,(ब्रजभाषा), आकार– 19.5X15 से.मी., संग्रहीत– वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

चित्र संख्या–4 रासलीला, 18वीं शती, संग्रहीत– ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन